Rajyogini Dadi Janki

Rajyogini Dadi Janki, the late spiritual head of the Brahma Kumaris, a global organisation with its headquarters in Mount Abu, India, was a widely admired woman leader. Her example, teachings and caring nature won hearts and inspired courage. She introduced the ancient technique of Rajyoga meditation to millions of people across the world.

Born in 1916, Dadi Janki had a deep concern for the well-being of others. She dedicated her life to spiritual service at the age of 21, after coming in contact with the Brahma Kumaris.

Between 1937 and 1951, as part of a community of nearly 400 people, she devoted her time to intense spiritual efforts as well as being the main nurse for the community. She mastered the practice of Rajyoga meditation as a method for self-transformation.

In the decades that followed India's independence, she served throughout the country teaching Rajyoga to spiritual seekers. In 1974, she was sent by the organisation to London, United Kingdom, from where her vision and drive saw the teachings of the Brahma Kumaris carried to more than 120 countries.

Dadi Janki's lifelong focus was to align her mind and heart to a higher purpose. She showed people of all background how to regain true self-respect, become free of negative tendencies and serve the world. For this service, she was internationally acknowledged as a powerful spiritual leader.

Dadi Janki was a friend and guide to prominent figures across the world. Authors, university teachers, politicians, artists, scientists and religious leaders from all cultures and faiths found in her wise counsel comfort and reassurance on their own life's journey. She encouraged them to serve to uplift the world through a deep inner commitment to peace, universal love and happiness.

Even as she travelled all over the world and met people from different walks of life, Dadi Janki remained a simple and humble server.

Dadi Janki was deeply aware of the selfish tendencies that afflict human relationships and affairs and that put our world in peril. However, she was a visionary with an unswerving faith. "Those with a positive vision of the future give us an image of a world on this planet where all things are given freely, where the highest human potential is fully realised," she said.

Dadi Janki also personified Indian culture in many ways. She translated the symbols and stories of the Indian scriptures into frameworks understandable for those of other cultures, enabling people of all faiths to appreciate the depth of the traditions of India.

Dadi Janki took the lead in contributing to an ethical and spiritual approach to global issues such as women's empowerment and environment protection. She also encouraged and inspired inter-religious understanding and cooperation throughout her life.

Dadi Janki passed away on March 27, 2020, at the age of 104.

Department of Posts is pleased to issue a Commemorative Postage Stamp on 'Rajyogini Dadi Janki' to commemorate her contribution to the spiritual upliftment of millions.

Credits:

Sheetlet	: Ms. Alka Sharma
Stamp/FDC/ Brochure/ Cancellation Cachet	: Ms. Nenu Gupta
Text	: Referenced from content provided by Brahma Kumaris

भारतीय डाक
India Post

डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS

राजयोगिनी दादी जानकी
Rajyogini Dadi Janki

विवरणिका BROCHURE

राजयोगिनी दादी जानकी

राजयोगिनी दादी जानकी, वैश्विक संगठन ब्रह्माकुमारीज़ की आध्यात्मिक प्रमुख थीं, जिसका मुख्यालय माउंट आबू, भारत में है। वे एक बहुचर्चित महिला नेता थीं। उन्होंनें अपने आदर्शों, शिक्षा और शुभचिंतक स्वभाव से सबका दिल जीता और उनमें साहस का संचार किया। उन्होंने दुनिया भर के लाखों लोगों को राजयोग की प्राचीन तकनीक से परिचित कराया।

दादी जानकी का जन्म सन् 1916 में हुआ था। उन्हें दूसरों की भलाई की बहुत चिंता थी। उन्होंने ब्रह्माकुमारीज़ के संपर्क में आने के बाद 21 वर्ष की अवस्था में ही अपना जीवन आध्यात्मिक सेवा के लिए समर्पित कर दिया।

लगभग 400 लोगों के समुदाय के एक सदस्य के रूप में उन्होंने 1937 और 1951 के बीच गहन आध्यात्मिक प्रयासों के साथ–साथ समुदाय की मुख्य सेविका के रूप में अपना समय अर्पित किया। उन्होंने आत्म–सुधार की विधि के रूप में राजयोग साधना में महारत हासिल की।

भारत की स्वतंत्रता के बाद के दशकों में आध्यात्मिक साधकों को राजयोग सिखाने के लिए पूरे देश में उन्होंने सेवा की। 1974 में उन्हें संगठन द्वारा लंदन भेजा गया। वहां से उन्होंने अपने विजन और अभियान के माध्यम से 120 से भी अधिक देशों में ब्रह्माकुमारीज़ के उपदेशों का प्रचार–प्रसार किया।

दादी जानकी का ध्येय आजीवन अपने मन और हृदय को ऊंचे उद्देश्य के साथ जोड़ने में लगा रहा। उन्होंने सभी तरह की पृष्ठभूमि के लोगों को बताया कि वास्तविक आत्मसम्मान कैसे हासिल किया जाए, नकारात्मक प्रवृत्ति से कैसे मुक्त हुआ जाए और कैसे संसार की सेवा की जाए। इस सेवा के कारण उन्हें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक शक्तिशाली आध्यात्मिक नेता के रूप में स्वीकार किया गया।

दादी जानकी दुनिया भर की प्रमुख हस्तियों की मित्र और मार्गदर्शक थीं। लेखकों, विश्वविद्यालयों के शिक्षकों, राजनेताओं, कलाकारों, वैज्ञानिकों तथा सभी संस्कृतियों एवं धर्मों के धर्मगुरुओं को उनकी जीवन–यात्रा के संदर्भ में बुद्धिमत्तापूर्ण परामर्श दिया, जिससे उन्हें सुविधा और आश्वासन मिला। उन्होंने, उन्हें शांति, सार्वभौमिक प्रेम और खुशी के लिए गहरी आंतरिक प्रतिबद्धता के माध्यम से संसार के उत्थान के लिए प्रोत्साहित किया।

पूरी दुनिया की यात्रा करने के पश्चात और विभिन्न क्षेत्रों के लोगों से मुलाकात के बाद भी दादी जानकी सरल और विनम्र सेविका बनी रहीं।

दादी जानकी को इस बात की गहरी जानकारी थी कि स्वार्थ की प्रवृत्ति मानवीय संबंधों को खराब कर देती है और संसार के लिए संकट उत्पन्न करती है। तथापि वे अटल विश्वास वाली दूरदर्शिनी थीं। उनका कहना था, "जो लोग भविष्य की सकारात्मक परिकल्पना करते हैं, वे पृथ्वी पर ऐसे समाज का निर्माण करेंगे जहां सभी वस्तुएं मुक्तहस्त बांटी जाएं और मानव की सर्वोच्च क्षमताओं का पूरा–पूरा इस्तेमाल किया जाए"।

दादी जानकी ने भी भारतीय संस्कृति का कई रूपों में मानवीकरण किया। उन्होंने भारतीय धर्मग्रंथों के प्रतीकों और कथाओं का अनुवाद इस प्रकार किया कि अन्य संस्कृतियों के लोग इसे समझ सकें और सभी धर्मों के लोग भारतीय परंपराओं की गहराई को समझ सकें।

दादी जानकी ने महिला सशक्तीकरण और पर्यावरण संरक्षण जैसे वैश्विक मुद्दों पर नैतिक और आध्यात्मिक रूप से योगदान देने का बीड़ा उठाया। उन्होंने जीवन भर अंतर–धार्मिक समझ और सहयोग को प्रोत्साहित और प्रेरित किया।

दादी जानकी का निधन 27 मार्च, 2020 को 104 वर्ष की आयु में हो गया।

डाक विभाग, लाखों लोगों के आध्यात्मिक उत्थान में योगदान देने वाली 'राजयोगिनी दादी जानकी' पर स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है ।

आभार :

शीटलेट	:	श्रीमती अलका शर्मा
डाक टिकट / प्रथम दिवस आवरण / विवरणिका / विरूपण कैशे	:	श्रीमती नीनू गुप्ता
पाठ	:	ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा प्रदान की गई सामग्री से संदर्भित

भारतीय डाक
India Post

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसे
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक टिकटें	:	804450
Stamps Printed	:	804450
मुद्रित शीटलेट्स	:	111000
Sheetlets Printed	:	111000
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philatelic Bureaux across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00